विचार बिन्दु

गुलाब को उपदेश देने की आवश्यकता नहीं होती। वह तो केवल अपनी खुशबू बिखेरता है। उसकी खुशबू ही उसका संदेश है। - महात्मा गांधी

सफलता का मूलमंत्र है युक्ति

युक्ति एक सार्वभौमिक सिद्धांत है। आचार्य चरक के अनुसार अनेक कारणों की समग्रता और एकीकरण से उत्पन्न भावों को जो बुद्धि देखती है, वह युक्ति है। युक्ति से वत्तर्मान, भूत और भविष्य, तीनों कालों का अनुमान होता है। युक्ति के द्वारा धन-संपत्ति, धर्म और कत्तर्व्यपालन और उपभोग और आनंद प्राप्त किया जाता है (च.सू.11.25): बुद्धिः पश्यति या भावान् बहुकारणयोगजान्। युक्तिस्त्रिकाला सा ज्ञेया त्रिवर्गः साध्यते यया।। ध्यान दीजिये, यहाँ आचार्य चरक ने युक्ति को परिभाषित तो किया ही है, साथ ही युक्ति की सार्वभौमिकता का दर्शन भी स्पष्ट किया है। युक्ति के द्वारा अर्थ, धर्म और काम की सिद्धि का सिद्धांत वस्तुतः जीवन में पुरुषार्थ साधने की रणनीति है। संक्षेप में कहें तो पूर्व में प्राप्त समग्र अनुभव और जानकारी के द्वारा अज्ञात को जान लेने वाली बुद्धि ही युक्ति है। आचार्य चरक द्वारा युक्ति की परिभाषा को बहुत लोगों ने बहुत प्रकार से विश्लेषण किया है। अनेक प्रकार के संयोगों से उत्पन्न हुये अविज्ञात भावों या विषयों को, विज्ञात विषयों के कार्य व कारण भावों के प्रकाश में जो बुद्धि देखती है या ज्ञान कराती है, उसे युक्ति कहा जाता। इस युक्ति के द्वारा त्रिकाल (वर्तमान, भूत, भविष्य) का ज्ञान होता है तथा त्रिवर्ग (धर्म, अर्थ और काम) की सिद्धि होती है। एक अन्य रूप में देखें तो जो बुद्धि अनेक कारणों के संयोग से उत्पन्न अथवा ज्ञात जिन भावों को देखती है उस त्रिकाल-ज्ञानकारक बुद्धि को युक्ति कहते हैं। इसी के द्वारा अर्थ, धर्म व काम की उपलब्धि की जाती है। अगर युक्ति को प्रमाण के रूप में देखा जाये तो यह वस्तुतः अनुमान प्रमाण में समाहित और अनुमान की सहायक मानी जाती है। यही कारण है कि आचार्य चरक द्वारा सूत्रस्थान में आप्तोपदेश, प्रत्यक्ष, अनुमान और युक्ति को पृथक-पृथक प्रमाण मानने के बाद भी आगे विमानस्थान में अनुमान को परिभाषित करते समय स्पष्ट किया है कि अनुमान वह तर्क है जो युक्ति की अपेक्षा रखता है (च.वि.4.6): अनुमानं खलु तर्को युक्त्यपेक्षः।।

आयुर्वेद के प्रमुख ग्रंथों और संहिताओं का विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि औषधियों व चिकित्सा को प्रमाण-आधारित बनाने के लिये चार प्रमुख विधियाँ प्रयुक्त होती रही हैं। इनमें प्रत्यक्ष प्रमाण या डायरेक्ट ऑब्जर्वेशन, अनुमान या इनफरेंशियल एवीडेन्स, आप्तोपदेश या विद्वानों द्वारा पूर्व में दी गयी जानकारी, और अंततः युक्ति प्रमाण या रेशनल एक्सपेरिमेंटल एवीडेन्स हैं।

यही कारण है कि विमानस्थान में मूलतः तीन ही प्रमाण-आप्तोपदेश, प्रत्यक्ष, अनुमान-वर्णित किये गये हैं। अनुमान में ही युक्ति का अर्न्तभाव मान लिया जाता है। युक्ति केवल कोरा दर्शन नहीं बल्कि एक ठोस प्रायोगिक साधन है। बहुत से विज्ञात या जाने-पहचाने अर्थों में कारण और प्रभाव को देखकर अविज्ञात या अपरिचित या अज्ञात अर्थों में कारण और प्रभाव को ज्ञात करना, समझना या प्रयोग करना युक्ति है। उदाहरण के लिये यदि आप यह पहले से जानते हैं कि जोते हुये खेत में अनुकूल ऋतु में बीज बोने और समय-समय पर खाद-पानी देने से अनाज का अच्छा उत्पादन होता है, तो आपके लिये यह विज्ञात अर्थ है। इस विज्ञात अर्थ से यह भी समझा जा सकता है कि वन-भूमि में वर्षा-जल एवं मृदा संरक्षण कर बीजारोपण या पौधारोपण करने तथा पौधों की सिंचाई और देखभाल करने पर वृक्ष तैयार होंगे। ऐसा समझना युक्ति है। एक अन्य उदाहरण से युक्ति का ठोस प्रायोगिक महत्त्व और भी स्पष्ट हो जायेगा। आयुर्वेद के सामान्य-विशेष सिद्धान्त के अनुसार यह माना जाता है कि एक जैसे भावों (द्रव्य, गुण और कर्म) को समान प्रकार के भावों से मिलाने पर बढ़त होती है और विशेष या असमान भावों को मिलाने पर ह्रास या घटत होती है। यह विज्ञात अर्थ है। इस सिद्धान्त (यहाँ पर विज्ञात अर्थ) के अनुसार यदि युक्ति लगाकर देखें तो एक बात स्पष्ट होती है कि घर में गुस्सैल किशोर या किशोरी के गुस्से को ठंडा करने के लिये यदि माता-पिता गुस्से और चिड़चिड़ाहट से पेश आते हैं तो किशोरों का गुस्सा और ज्यादा भड़केगा। इसके विपरीत यदि गुस्सैल किशोर या किशोरी से माता-पिता स्नेहपूर्वक व्यवहार करें उनका गुस्सा भी शांत हो जाता है। यह युक्ति है। आयुर्वेद में युक्ति का प्रमाण-आधारित चिकित्सा में भारी महत्त्व है। चरकसंहिता में स्पष्ट किया गया है कि मृत्यु की तिथि तय नहीं है, अपितु प्राणियों की आयु युक्ति की अपेक्षा रखती है (च.वि. 3.29): भूतानामायुर्युक्तिमपेक्षते। युक्ति से उम्र बढ़ सकती है। असल में युक्ति-व्यपाश्रय या प्रमाण-आधारित चिकित्सा आचार्य चरक द्वारा आयुर्वेदाचार्यों पर किये गये विश्वास की पराकाष्ठा है। विस्तृत संहिताओं के बाद भी आयुर्वेदाचार्यों पर इतना बड़ा विश्वास करने का कारण सिर्फ यह है कि चिकित्सा में सफलता युक्ति पर निर्भर है (च.सू. 2.16): सिद्धिर्युक्तौ प्रतिष्ठिता। जब सफलता युक्ति पर आश्रित हो तो केवल शास्त्रों और संहिताओं के निर्देश मात्र नहीं बल्कि आयुर्वेदाचार्यों का अनुभवजन्य ज्ञान भी महत्वपूर्ण हो जाता है। युक्ति-व्यपाश्रय का आयुर्वेद में महर्षि चरक द्वारा किया गया उपयोग आयुर्वेद को पूर्णतः प्रमाण-आधारित चिकित्सा पद्धित बना देता है। उदाहरण के लिये (च.सू., 11.54): युक्तिव्यपाश्रयं-पुनराहारौषधद्रव्याणां योजना, अर्थात आहार तथा औषधि द्रव्यों की योजना को युक्ति-व्यपाश्रय कहा जाता है। यह योजना उन्ही तर्कों और विधियों पर निर्भर होती है जिनकी चर्चा ऊपर की गयी है। यह पूर्ण रूप से कारण और प्रभाव (कॉज एंड इफ़ेक्ट) के अद्भुत सैद्धांतिक पृष्ठभूमि पर केन्द्रित है (च.सू. 11.32): कर्तृकरणसंयोगात् क्रिया कृतस्य कर्मणः फलं नाकृतस्य नाङ्कुरोत्पत्तिरबीजात् कर्मसदृशं फलं नान्यस्माद्बीजादन्यस्योत्पत्तिः इति युक्तिः। तात्पर्य यह है कर्ता व साधन के जोड़ से क्रिया होती है, किये गये कार्य का फल मिलता है न कि नहीं किये गये कार्य का, बीज के बिना अंकुर नहीं उत्पन्न होता, जैसा काम वैसा फल, एक जाति के बीज से अन्य की उत्पत्ति नहीं होती, यही युक्ति है। आयुर्वेदिक औषधियों के संबंध में भी युक्ति की बड़ी भूमिका है (च.सू.2.16): मात्राकालाश्रया युक्तिः सिद्धिर्युक्तौ प्रतिष्ठिता। तिष्ठत्युपरि युक्तिज्ञो द्रव्यज्ञानवतां सदा।। औषधीय द्रव्यों की युक्ति (योजना, योग-निर्माण, योगीकरण या फार्म्युलेशन) मात्रा और काल पर निर्भर है, सफलता युक्ति पर निर्भर है, इसीलिये युक्तिज्ञ सदैव द्रव्य-ज्ञानियों से ऊपर है। ध्यान से देखा जाये तो युक्ति एक सार्वभौमिक सिद्धान्त है, जिसमें यह संदेश निहित है कि युक्ति से धन, सम्पदा, धर्म तथा आनन्द सब प्राप्त किया जा सकता है। आधुनिक प्रबन्ध-विज्ञान की दृष्टि से देखें तो किसी भी कार्य में सफलता युक्ति पर आश्रित है। युक्ति के बिना सामजिक, आर्थिक या पारस्थितिकीय तंत्रों को नहीं साधा जा सकता। आधुनिक प्रबन्ध-विज्ञान में युक्ति उपलब्ध ज्ञान, शोध एवं अनुभवजन्य ज्ञान के प्रकाश में किसी नवीन कार्य के सम्पादन के लिये जो साधन या विधि प्रयोग में लायी जाती है, वह युक्ति है। प्रबंधकों के अपने पूर्व के अनुभवों की समग्रता के आधार पर जब उनकी बुद्धि वर्तमान परिस्थितियों और समस्याओं को समझती है या देखती है और उनका हल सुझाती है तो उसे युक्ति कहा जाता है। असल में प्राचीन काल से लेकर आज तक युक्ति के बिना मानव का काम नहीं चल सका। सफलता युक्ति पर आश्रित है (च.सू. 2.16): सिद्धिर्युक्तौ प्रतिष्ठिता। यही कारण है कि आयुर्वेद के अलावा भी अनेक ग्रंथों में युक्ति के महत्वपूर्ण वर्णन उपलब्ध हैं। उदाहरण के लिये बुद्धचरित में अश्वघोष का कथन है कि समुचित युक्ति से करने पर सब कुछ किया जा सकता है (बुद्धचरित, 13.60): न्यायेन युक्तं च कृतं च सर्वम्। दरअसल युक्ति पर पूरा युक्तिशास्त्र है जिसे उपयुक्तता और औचित्य का विज्ञान भी कहा जाता है। युक्ति को जुगाड़ समझाने की भूल नहीं करना चाहिये। युक्ति और जुगाड़ में कई अंतर हैं, पर मुख्य फ़र्क तर्क और तुक्का का है। युक्ति स्वयं प्रमाण होते हुये प्रमाण-आधारित चिकित्सा का मूल आधार है। जुगाड़ ट्रायल-एंड-एरर हैः काम कर भी जाये तो भी घुणाक्षर न्याय ही कहलायेगा। घुनों के चलने से लकड़ी में अक्षरों जैसे आकार बन जाते हैं, हालाँकि घुन लिखने के उद्देश्य से नहीं काटते कि अक्षर बनें। इसी प्रकार जहाँ एक काम करने में कोई दूसरी बात अनायस हो जाय वहाँ घुणाक्षर न्याय हो जाता है। इस न्याय या उक्ति का प्रयोग ऐसे स्थलों पर करते हैं जहाँ किसी के द्वारा ऐसा आकास्मिक कार्य हो जाता है जो स्पष्ट, उद्देश्य, ज्ञान, तर्क, या युक्ति का प्रयोग किये बिना ही अनायास हो गया हो। कहने का तात्पर्य यह है कि जब तक विधि दोषपूर्ण या तर्कविहीन होती है, तब तक परिणाम केवल संयोग ही कहलाता है। आधुनिक वैज्ञानिक सन्दर्भ में ज्ञान के उत्पादन के चार तरीके हैंः थ्योरी, ऑब्जरवेशन, एक्सपेरिमेंट और मॉडलिंग। यहाँ युक्ति को मॉडलिंग के समकक्ष मन जाता है क्योंकि पूर्व में उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर मैथमेटिकल-मॉडलिंग के द्वारा भविष्य की स्थिति का ज्ञान किया जाता है। आयुर्वेद के प्रमुख ग्रंथों और संहिताओं का विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि औषधियों व चिकित्सा को प्रमाण-आधारित बनाने के लिये चार प्रमुख विधियाँ प्रयुक्त होती रही हैं। इनमें प्रत्यक्ष प्रमाण या डायरेक्ट ऑब्जर्वेशन, अनुमान या इनफरेंशियल एवीडेन्स, आप्तोपदेश या विद्वानों द्वारा पूर्व में दी गयी जानकारी, और अंततः युक्ति प्रमाण या रेशनल एक्सपेरिमेंटल एवीडेन्स हैं। प्रमाण-आधारित आयुर्वेद न केवल इन चार महत्वपूर्ण अवधारणाओं पर टिका है, बल्कि उक्त चारों विधियाँ शोध-आधारित प्रमाण, स्थानीय-ज्ञान पर आधारित प्रमाण, अनुभवजन्य-ज्ञान पर आधारित प्रमाण, आयुर्वेद की संहिताओं पर आधारित प्रमाण, सामाजिक स्वीकार्यता पर आधारित प्रमाण तथा आधुनिक शोध में प्रचलित थ्योरी, ऑब्जर्वेशन, एक्सपेरिमेंट एवं मॉडलिंग से बहुत भिन्न नहीं हैं। इस चर्चा का हमारे जीवन में क्या महत्त्व है? सबसे पहली बात तो यह है कि युक्ति वस्तुतः ज्ञात यथार्थ के माध्यम से अज्ञात यथार्थ को जानने का विज्ञान है। इसलिये युक्तिपूर्वक कार्य करने से जीवन में कुछ प्राप्त करने के लिये युक्ति का प्रयोग ही श्रेयस्कर है। दूसरी बात यह है कि आप उन आयुर्वेदाचार्यों को उत्तम मानकर उनसे चिकित्सा ले सकते हैं जो पूर्णतः युक्ति-व्यपाश्रयी या प्रमाण-आधारित चिकित्सा करते हैं। और तीसरी बात यह है कि युक्ति कोरा दर्शन नहीं बल्कि एक ठोस प्रायोगिक साधन है जिसके माध्यम से आप स्वयं के लिये उन सात दीवारों-आहार, विहार, सद्वृत्त, स्वस्थवृत्त, पंचकर्म, रसायन, औषधि-को सम्हाल सकते हैं जो हमारे जीवन और मृत्यु के बीच या स्वास्थ्य और रुग्णता के बीच अस्तित्व में हैं। जहाँ तक प्रतिदिन के जीवन का प्रश्न है उसमें सभी प्रकार के कार्यों के संपादन में सफलता प्राप्त करने का मूलमंत्र युक्तिपूर्वक लगे रहना है।

डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त तथा वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

देश की ब्यूरोक्रेसी को मोटिवेट करता नरेन्द्र मोदी का संदेश

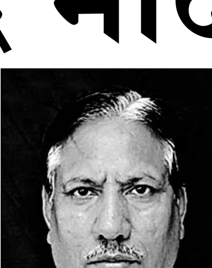
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जयपुर में देशभर के डीजी-आईजी कॉंफ्रेंस के दौरान तीन दिन की जयपुर यात्रा के पहले दिन राजस्थान भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश कार्यालय में विधायकों-संगठन पदाधिकारियों के बीच जिस तरह से डबल इंजन की सरकार का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने पर जोर दिया हैं वहीं ब्यूरोक्रेसी और तबादलों को लेकर जो संदेश दिया है वह ना केवल समसामयिक है अपितु देश की ब्यूरोक्रेसी के लिए भी उत्साहवर्द्धक है।

दरअसल सरकार बदलते ही पूर्व सरकार से जुड़े ब्यूरोक्रेसी में बदलाव का दौर आरंभ हो जाता है और ब्यूरोक्रेसी के अधिकारियों की निष्ठा और प्रतिबद्धता पर प्रश्न उठाये जाने लगते हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ब्यूरोक्रेसी को लेकर साफ संदेश दिया है कि ब्यूरोक्रेसी कभी भी किसी पार्टी की नहीं होती। ब्यूरोक्रेसी हमेशा सरकार की मंशा और मेंडेट के अनुसार काम करती है। जो सरकार होती है और उसकी जो रीति-नीति होती है उसको धरातल पर अमली जामा पहुंचाने की जिम्मेदारी ब्यूरोक्रेसी की होती है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने संबोधन में बड़ी बात कही कि ब्यूरोक्रेसी जिस पार्टी की सरकार होगी, उसके अनुरुप ही काम करती है। इस संदेश में सबसे बड़ी बात यह है कि प्रधानमंत्री ने एक तरह से देश और प्रदेशों की ब्यूरोक्रेसी पर विश्वास जताने के साथ ही उत्साहवर्द्धन भी किया है।

दरअसल ब्यूरोक्रेसी सरकार की रीति-नीति और योजनाओं-कार्यक्रमों को अमली जामा पहनाने का काम करती है। ब्यूरोक्रेसी में कुछ अधिकारी प्रोएक्टिव होते हैं तो कुछ अधिकारी अपनी गति से चलते हैं। इसमें भी कोई दो राय नहीं कि अपवाद स्वरुप एकाध अधिकारी हो सकते हैं जो पार्टी विशेष की धारा के अनुसार चलते है या चलने का प्रयास करते हैं पर सरकार की निगाह में ऐसे अधिकारी आ ही जाते हैं और सरकार स्वयं उन्हें किनारे करने में देरी नहीं करती। यह भी नहीं भूलना चाहिए कि कुछ ब्यूरोक्रेट्स रिजल्ट ओरियंटेड होते हैं तो कुछ अधिकारी क्राइसिस मैनेजमेंट में एक्सपर्ट होते हैं। अब होता यह है कि प्रोएक्टिव, क्राइसिस मैनेंजमेंट में आगे रहने वाले या रिजल्ट ओरियंटेड अधिकारी निगाह में भी जल्दी ही आ जाते हैं और कुछ लोगों को उनका इस तरह से आगे आना या आगे रहना सुहाता नहीं है। बदलाव के समय इन्हें कुछ समय के लिए खामियाजा भी भुगतना पड़ता है। इसीलिए आज के संदर्भ में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का संदेश खास अहमियत रखता है। वैसे भी जब सरकार बनती है तो मुख्यमंत्री अपने विष्वास, संजीदा और रिजल्ट ओरियंटेड अधिकारी को लेकर ही अपनी टीम बनाते हैं। सरकार बदलने पर कुछ समय के लिए यह अधिकारी अवश्य नजरों में रहते हैं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने यहां तबादला डिजायरों से भी दूर रहने की सलाह दी है और इसके लिए स्व. भैरोसिंह जी के समय का उदाहरण भी दिया है। मुझे अच्छी तरह ध्यान है कि उस समय जब अत्यधिक दबाव पड़ने लगा तो तत्कालीन सहकारिता मंत्री सुजान सिंह यादव का साफ कहना रहा कि यदि अधिकारी की शिकायत है तो वे जनप्रतिनिधि की शिकायत पर उस पद से हटाने में कोई देरी नहीं करेंगे पर जहां तक उस पद पर किसी को लगाने की बात है तो उन्होंने साफ साफ कहा कि सरकार वहां पर अपनी सोच और समझ के अनुसार अधिकारी लगायेंगी। यानी कि डिजायर आप अधिकारी को हटाने की तो कर सकते हैं पर अपनी पसंद के अधिकारी को लगाने की नहीं। इस तरह के अनेक उदाहरण मिल जाएंगे। दरअसल गंभीरता से देखा जाए तो यह तबादला उद्योग और डिजायर सिस्टम सरकार की बदनामी का भी बड़ा कारण बनता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने साफ संदेष देने का प्रयास किया है। फिर ब्यूरोक्रेसी से काम लेने की कला तो सरकार में होनी ही चाहिए, यह अपेक्षा की जाती रही है।

देखा जाए तो लोकतात्रिंक व्यवस्था में ब्यूरोक्रेसी की खास भूमिका होती है। भारतीय चिंतकों से लेकर देश-दुनिया के जाने माने चिंतकों ने ब्यूरोक्रेसी के महत्व को स्वीकारने के साथ ही ब्यूरोक्रेसी की भूमिका भी अपने अपने तरीके से तय की है। कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' में ब्यूरोक्रेसी यानी कि नौकरशाही के बारे में विस्तार से बताया गया है, लेकिन आज हम जिस रूप में ब्यूरोक्रेसी को देखते हैं उसको किसी सीमा में नहीं बांधा जा सकता। प्राचीन मिस्त्र और रोम में भी नौकरशाही की मौजूदगी के प्रमाण मिलते हैं, लेकिन प्राचीन नौकरशाही प्रमुखतः राजशाही पर आधारित थी, शासक के निजी विचार व भावनाओं पर शासन चलता था। किंतु आज की ब्यूरोक्रेसी कानून कायदों से चलने वाली व्यवस्था है। पूंजीवाद और प्रजातंत्र के विस्तार ने आधुनिक नौकरशाही को सरकार का अनिवार्य अंग बना दिया है।

1745 में फ्रांसीसी अर्थशास्त्री विन्सेट डी गोर्नी ने ब्यूरोक्रेसी शब्द का प्रयोग किया। नौकरशाही को अंग्रेजी में 'ब्यूरोक्रेसी' कहते हैं, जो लेटिन भाषा के 'ब्यूरो' जिसका अर्थ है 'मेज' और ग्रीक भाषा के 'क्रेसी' जिसका अर्थ है 'शासन' से मिलकर बना है। इस प्रकार 'ब्यूरोक्रेसी' का तात्पर्य 'मेज का शासन' से है। जॉन स्टुअर्ट मिल के अनुसार नौकरशाही का अर्थ समाज में सरकार के व्यावसायिक रूप से दक्ष प्रशासकों से है। जर्मन समाजशास्त्री मैक्स वेबर पहले ऐसे विद्वान हैं जिन्होंने नौकरशाही के नकारात्मक पहलुओं के बजाय सकारात्मक पहलुओं पर ज्यादा बल दिया और नौकरशाही के आदर्श मॉडल का प्रतिपादन किया। वेबर ने नौकरशाही के बारे में बताया कि नियुक्त किये गए अधिकारियों का समूह ब्यूरोक्रेट कहलाता है। साल 1920 में वेबर की किताब ''विर्टशॉफ्ट एंड गेसलशॉफ्ट'' प्रकाशित हुई, जिसमें उन्होंने सत्ता के सिद्धांत के बारे में बताया है। वेबर के अनुसार सत्ता के तीन रूप हैं- ट्रेडिशनल पॉवर, मिराकूलस पॉवर एवं लीगल पॉवर। यह भी साफ हो जाना चाहिए कि शासन में ब्यूरोक्रेसी की भूमिका लगभग तय होती है, जहां चुनी हुई सरकार कानून कायदे, योजनाओं, कार्यक्रमों या यों कहें कि अपना एजेंडा प्रस्तुत करते हैं वहीं धरातल पर अमली जामा पहनाने की जिम्मेदारी व अहम भूमिका ब्यूरोक्रेसी की होती है। इसमें कोई दो राय नहीं कि प्रजातंत्र में चुनी हुई सरकार की ईच्छा शक्ति और वीजन का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है।

ऐसे में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने साफ संकेत दे दिया है कि ब्यूरोक्रेसी पर विश्वास कायम होना चाहिए और डिजायर सिस्टम से दूर रहना चाहिए। होना यह भी चाहिए कि एक सीमित सीमा तक ही डिजायर सिस्टम को महत्व दिया जाएं क्योंकि इसे पूरी तरह से व्यवस्था से अलग करना थोड़ा मुश्किल भरा काम रहेगा वहीं सरकार को अपना एजेंडा व मेंडेट स्पष्ट रुप से ब्यूरोक्रेसी को सौंपते हुए उसे धरातल पर लाने की जिम्मेदारी मय जबावदेही की दी जानी चाहिए। संभवतः यही मंशा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की है। निश्चित रुप से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की यह सोच और संदेष देश की ब्यूरोक्रेसी में नए उत्साह का संचार करेगी।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
वरिष्ठ पत्रकार एवं लेखक

बड़े बदले तभी होगा हिंदी के प्रति जनमानस में बदलाव

सतही तौर पर मनाए जाने वाले हिंदी दिवस को लाना ही होगा धरातल पर

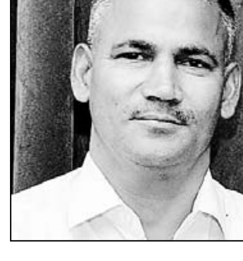
प्रकाश चंद्र शर्मा

आज 10 जनवरी है। यह सिर्फ कैलेंडर की तारीख नहीं,अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की मातृभाषा हिंदी को विश्व मे सम्मान दिलाने का एक खास दिन है। सभी जानते है कि इस रोज विश्व हिंदी दिवस प्रतिवर्ष मनाया जाता है। पूर्व में सुदूर पूर्व बसे हुए अप्रवासी भारतीयों के लिए हिंदी घर के बोलचाल की एक भाषा मात्र थी। लेकिन 17 वर्ष पूर्व भारत सरकार ने 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस घोषित कर अप्रवासी भारतीयों के लिए इस दिन को एक प्रकार से राष्ट्रीय उत्सव बना डाला।

पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए वर्ष 2006 में प्रति वर्ष 10 जनवरी को हिंदी दिवस मनाने का एलान किया था। विश्व में हिंदी का विकास करने और एक अंतरराष्ट्रीय भाषा के तौर पर इसे प्रचारित-प्रसारित करने के उद्देश्य से विश्व हिंदी सम्मेलनों की शुरुआत की गई और प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन 10 जनवरी 1975 को नागपुर में आयोजित हुआ था। इसीलिए इस दिन को विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। भारत के संविधान ने देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को 1950 के अनुच्छेद-343 के तहत देश की आधिकारिक भाषा के रूप में 1950 में अपनाया। इसके साथ ही भारत सरकार के स्तर पर अंग्रेजी और हिंदी दोनों भाषाएं औपचारिक रूप से इस्तेमाल हुईं। 1949 में भारत की संविधान सभा ने देश की आधिकारिक भाषा के रूप में हिंदी को अपनाया। वर्ष 1949 से प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है।

हिंदी दिवस का महत्व :-हिंदी दिवस को उस दिन को याद करने के लिए मनाया जाता है जिस दिन हिंदी हमारे देश की आधिकारिक भाषा बन गई। यह हर साल हिंदी के महत्व पर जोर देने और हर पीढ़ी के बीच इसको बढ़ावा देने के लिए मनाया जाता है जो अंगेजी से प्रभावित है। यह युवाओं को अपनी जड़ों के बारे में याद दिलाने का एक तरीका है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम कहाँ तक पहुंचे हैं और हम क्या करते हैं अगर हम अपनी जड़ों के साथ मैदान में डटे रहे और समन्वयित रहें तो हम अपनी पकड़ मजबूत बना लेंगे। यह दिन हर साल हमें हमारी असली पहचान की याद दिलाता है और देश के लोगों को एकजुट करता है।

जहां भी हम जाए हमारी भाषा, संस्कृति और मूल्य हमारे साथ बरक़रार रहने चाहिए और ये एक अनुस्मारक के रूप में कार्य करते है। हिंदी दिवस एक ऐसा दिन है जो हमें देशभक्ति भावना के लिए प्रेरित करता है। आज के समय में अंग्रेजी की ओर एक झुकाव है जिसे समझा जा सकता है क्योंकि अंग्रेजी का इस्तेमाल दुनियाभर में किया जाता है और यह भी भारत की आधिकारिक भाषाओं में से एक है। यह दिन हमें यह याद दिलाने का एक छोटा सा प्रयास है कि हिंदी हमारी आधिकारिक भाषा है और बहुत अधिक महत्व रखता है। जहां अंग्रेजी एक विश्वव्यापी भाषा है और इसके महत्व को अनदेखा नहीं किया जा सकता है वहीँ हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हम पहले भारतीय हैं और हमें हमारी राष्ट्रीय भाषा का सम्मान करना चाहिए। आधिकारिक भाषा के रूप में हिंदी को अपनाने से साबित होता है कि सत्ता में रहने वाले लोग अपनी जड़ों को पहचानते हैं और चाहते हैं कि लोगों द्वारा हिंदी को भी महत्व दिया जाए।

निस्संदेह भारत में हिंदी सबसे व्यापक रूप से इस्तेमाल की जाने वाला भाषा है। हालांकि अंग्रेजी के प्रति अभी भी भारतवासियों का झुकाव है और इसके महत्व पर स्कूलों और अन्य स्थानों पर जोर दिया जाता है परन्तु हिंदी हमारे देश की सबसे व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषा के रूप में मजबूत है। वर्ष 2001 में आयोजित जनगणना में 422 लाख से अधिक लोगों ने अपनी मातृभाषा के रूप में हिंदी का उल्लेख किया। देश में किसी भी अन्य भाषा का कुल आबादी का 10 प्रतिशत से अधिक उपयोग नहीं किया जाता है। हिंदी बोलने वाली अधिकांश आबादी उत्तर भारत में केंद्रित है। हिंदी भाषा उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़, हरियाणा, राजस्थान, उत्तराखंड और झारखंड सहित कई भारतीय राज्यों की आधिकारिक भाषा है। बिहार देश का पहला राज्य था जिसने अपनी एकमात्र आधिकारिक भाषा के रूप में हिंदी को अपनाया। बंगाली, तेलुगु और मराठी देश की अन्य व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषा हैं।

हिंदी दिवस हमारे सांस्कृतिक जड़ों को फिर से देखने और अपनी समृद्धता का जश्न मनाने का दिन है। हिंदी हमारी मातृभाषा है और हमें इसका आदर और उसका मूल्य समझना चाहिए। हिंदी दुनिया की चौथी व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषा है। जबकि भारत में ज्यादातर हिंदी बोलने वाली जनसंख्या है। अन्य देश जहां व्यापक रूप से हिंदी बोली जाती है वह है पाकिस्तान, नेपाल, मॉरीशस, फिजी, गुयाना और सूरीनाम। दुनिया भर में लोग हिंदी गीतों और हिंदी फिल्मों को प्यार करते हैं जो स्पष्ट रूप से इस भाषा के प्रति स्नेह को परिभाषित करता है।

हिंदी को प्राथमिकता न मिलना :- दुर्भाग्य से भले ही हिंदी दुनिया की चौथी व्यापक बोली जाने वाली भाषा है परन्तु इसके मूल देश में लोग इसको महत्व नहीं देते हैं। स्कूल से लेकर कॉलेज, कॉर्पोरेट, कार्यालयों तक अंग्रेजी को अधिक प्राथमिकता दी जाती है और हिंदी अंग्रेजी से पिछड़ जाती है। माता-पिता, शिक्षकों और हर किसी को लिखित और मौखिक रूप से अंग्रेजी सीखने के महत्व पर जोर देना आम बात है क्योंकि इससे नौकरी हासिल करने में काफी मदद मिलती है। यह देखना दुखदाई है कि नौकरियों और शैक्षिक पाठ्यक्रमों के लिए भी लोगों को स्मार्ट होना पड़ता है क्योंकि नौकरी पर रखने वाले अधिकारी उन्हें उनके अंग्रेजी से संबंधित ज्ञान के आधार पर चुनते हैं। बहुत से लोग सिर्फ इसलिए काम करने का अवसर खो देते हैं क्योंकि वे अंग्रेजी को धाराप्रवाह नहीं बोल पाते भले ही वे काम के बारे में अच्छी जानकारी रखते हों। हिंदी दिवस ऐसे लोगों को जगाने का प्रयास है और उनमें हिंदी भाषा के लिए सम्मान स्थापित करने का प्रयास है। सच मायने में हिन्दी दिवस मनाने का महत्व तभी है जब उच्च अदालतों और समस्त सरकारी कार्यालयों में हिन्दी को इस तरह अंगीकार किया जाए कि वहाँ से गुजरने वाले प्रत्येक कागज पर हिंदी में ही लिखा जाए। क्योंकि वर्तमान में निचले स्तर पर तो अदालतों और सरकारी कार्यालयों में हिन्दी को महत्व दिया जा रहा है लेकिन बड़ी अदालतों और केंद्र सरकार के महत्वपूर्ण दफ्तरों में अभी भी अंग्रेजीयत हावी है।

प्रकाश चंद्र शर्मा
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

रविवार 7 जनवरी 2024

पौष मास कृष्ण पक्ष, एकादशी तिथि, विक्रम सम्वत 2080, विशाखा नक्षत्र रात्रि 10.08 तक, शूलयोग रात्रि 4.52 तक, बवकरण दिन 12.44 तक, चन्द्रमा आज सायं 4.02 से वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

बुध धनु राशि में रात्रि 8.32 पर प्रवेश करेगा। आज सफल एकादशी है।

ग्रह स्थिति - सूर्य-धनु, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-धनु, बुध-वृश्चिक, गुरु-मेष, शुक्र-वृश्चिक, शनि-कुम्भ, राहु-मीन-केतु-कन्या राशि में संचार करेगा।

श्रेष्ठ चौघडिया - चर - 8.39 से 9.58 तक, लाभ-अमृत 9.37 से 12.33 तक, शुभ - 1.51 से 3.09 तक।

राहुकाल - 4.30 से 6.00 तक

सूर्योदय - 7.21 सूर्यास्त 5.44

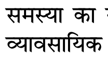

मेष

मेष - परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह संपन्न हो सकते हैं। सामुहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक

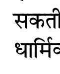

वृष

वृष - मित्रों-रिश्तेदारों से चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। स्वास्थ्य में सुधार होगा। धार्मिक-मांगलिक कार्यों में भाग ले

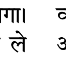

मिथुन

मिथुन - व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिजनों

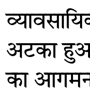

कर्क

घर-परिवार में सुख शांति बनी रहेगी। सुख-सुविधाएं बडेगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।अथितियों का आगमन बना रहेगा।

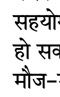

सिंह

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। घर-परिवार में मनोरंजन मौज-मस्ती के कार्यक्रम बन सकते हैं।

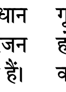

कन्या

धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। आज समय अर्नगल कार्यों में खराब हो सकता है।

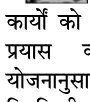

तुला

अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

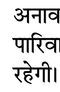

वृश्चिक

घर-परिवार के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भाग-दौड रहेगी। आज समय अर्नगल कार्यों में खराब हो सकता है।

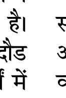

धनु

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

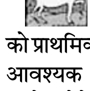

मकर

अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आवश्यक कार्य शीघ्रता-सुगमता से बनने लगेंगे। घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह संपन्न हो सकते हैं।

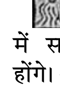

कुंभ

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखें।

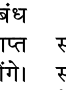

मीन

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में परेशानी व कष्ट हो सकता है।